بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 21.11 .25

तबूक नामक युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का ब्यान।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (नबुव्वत की तिथि 21 ,1404 हश) 21.11. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- तबूक नामक युद्ध के बारे में बयान हो रहा था, इस यात्रा के और अधिक विवरण आज बयान इकारूंगा। इस अवसर पर मुनाफ़िकों द्वारा रसूलुल्लाह ﷺ को कष्ट देने के प्रयत्नों पर भी चर्चा हुई है, जिसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है। तबूक की लड़ाई के पीछे वास्तव में यहूदी, ईसाई एवं मुनाफ़िकों का संयुक्त षडयंत्र काम कर रहा था। मदीने से तबूक की यात्रा वास्तव में मौत की घाटी की यात्रा थी। मुनाफ़िकों ने इस अवसर पर यह षडयंत्र किया कि वापसी के रास्ते में एक ऐसा स्थान था जहां रास्ता दो भागों में विभाजित हो जाता था। एक घाटी का रास्ता लम्बा था जबकि दूसरे रास्ते में घाटी संकीर्ण थी। यह रास्ता छोटा भी था। मुनाफ़िकों ने यह योजना बनाई कि जब मुसलमानों की सेना घाटी से होकर जाए तो लोगों की भीड़ के बीच में, रात के समय सारे मुनाफ़िक़ हुज़ूरे अकरम ﷺ की ऊंटनी के आस पास जमा हो जाएँ तथा ऊंटनी को जबरन घाटी के किनारे

की ओर हांक दिया जाए और कजावे की रस्सी को काट दिया जाए। इस प्रकार ऊंटनी हुज़ूर ﷺ को, नऊज़ुबिल्लाह खाई में गिरा देगी। अल्लाह तआला ने आंहुज़ूर ﷺ को मुनाफ़िकों की इस योजना से अवगत कर दिया और आप स. ने घोषणा करवा दी कि आप स. एवं आप स. के तीन साथियों के अतिरिक्त कोई भी घाटी की ओर से नहीं जाएगा।

इसके बावजूद मुनाफ़िकों ने तुरन्त यह योजना बनाई कि बारह पन्द्रह आदमी अपने चेहरों को कपड़ों में छिपा कर तेज़ी से घाटी की ओर निकल जाएं और अचानक ऊंटनी को भगाना शुरू कर दें, और उसे बिदका कर, नऊज़ुबिल्लाह इस घटना को सफल बना दें जिसकी वे इच्छा कर रहे थे। आंहुज़ूर ﷺ जब घाटी में चल रहे थे तो अचानक आप स. ने लोगों के चलने की आहट सुनी। वे लोग ऊंटनी के पास आ गए और उसे डराया। इसके कारण कुछ सामान भी गिर गया। आंहुज़ूर ﷺ ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी. को आदेश दिया कि इन मुनाफ़िकों पर हमला करके इन्हें डरा दिया जाए। अतः हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी. डंडे के साथ मुनाफिकों की सवारियों को मारने लगे और कहने लगे कि अल्लाह के दुश्मनों! एक तरफ़ हटो। मुनाफ़िक़ लोग समझ गए कि रसूलुल्लाह ﷺ उनके षडयंत्र को समझ गए हैं, अतएव वे तुरन्त एक ओर हटे तथा वापस आकर सेना में मिल जुल गए।

एक रिवायत के अनुसार आप स. को अल्लाह तआला ने इन मुनाफ़िकों के नामों से भी परिचित फ़रमा दिया था। अतः आंहुज़ूर ﷺ ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी. को फ़रमाया कि मैं तुमसे एक भेद की बात कहने वाला हूँ। फिर आप स. ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे इन मुनाफ़िकों के नाम बता दिए हैं और मुझे आदेश है कि मैं इनके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ूं।

मक्का पर विजय पाने के बाद मुनाफ़िकों के षडयंत्रों में भी तेज़ी आ गयी थी। जब उन्होंने देखा कि यहूदियों के क़बीले अब अपनी शक्ति खो चुके हैं तो उन्होंने अरब के बाहर रौमी शासन जैसी शक्तियों से सहायता मांगने की योजना बनाई। इसके साथ साथ मदीने में भी एक स्थाई केंद्र बनाने की योजना तय्यार की। मुनाफ़िकों की योजना यह थी कि एक ऐसा केंद्र हो जहां मुसलमानों के विरुद्ध साज़िशें बनाई जा सकें और वहां अस्त्र शस्त्र भी जमा करके रखे जाएं। किन्तु प्रत्यक्ष में वह केंद्र ऐसा हो कि दूसरे मुसलमानों को सन्देह भी न हो।

अबू आमिर जो कुछ अवधि तक इस परिवेश से ग़ायब रहा था, सहसा सामने आ गया और प्रोपगेंडा करने वालों ने उसे अबू आमिर राहिब कहना शुरू कर दिया। अबू आमिर खिज़रज नामक क़बीले से सम्बन्ध रखता था। हुज़ूर ﷺ के मदीना आने के बाद यह मक्का चला गया था तथा उसने क़ुरैश को नबी करीम ﷺ से युद्ध करने के लिए उकसाया था। इसके सम्बन्ध में नबी करीम स. ने दुआ की थी कि यह अपने देश से दूर एकांत की मृत्यु प्राप्त करे। अबू आमिर ने ही मुनाफ़िकों को यह सुझाव दिया कि तुम लोग क़ुबा नामक स्थान पर

एक मस्जिद बनाओ और वहाँ अपना सैन्य अड्डा बनाकर जंग की तय्यारी करो। अबू आमिर स्वंय रौम देश की ओर निकल गया था और शाम देश में रौमी बादशाह कैसर को मुसलमानों के विषय में बहकाता रहा, उसे मुसलमानों के साथ युद्ध करने के लिए उकसाया। उसने क़ेसर को कहा कि मुसलमान कम संख्या में तथा दुर्बल अवथा में और ग़रीब हैं, इनके दुश्मन अधिक हैं और तुम्हें इनसे डरने की आवश्यकता नहीं। किन्तु यदि तुमने इनके विरुद्ध अभी कारवाई नहीं की तो भविष्य में यह तुम्हारे शासन के लिए अच्छा न होगा। हिरक्ल नामक शासक ने उसे अपने पास ठहराया और संतुष्ट किया तथा वादा किया कि तुम्हारी सहायता की जाएगी। इसी बीच अबू आमिर ने अपने धार्मिक एवं षडयंत्रकारी साथियों को ख़ुश ख़बरी सुनाई कि निकट भविष्य में एक विशाल सेना लेकर मैं मदीने पर आक्रमण कर दूंगा। अतः तुम लोग मेरे लिए एक सुदृढ़ ठिकाना बना दो। इस कारण से मुनाफ़िकों ने क़ुबा नामक स्थान पर एक मस्जिद का निर्माण किया था। इस मस्जिद को मस्जिदे ज़िरार कहा जाता है। अबू आमिर की यह इच्छा भी पूरी न हुई और अंततः वह शाम देश में ही एकांत एवं देश से दूर अवस्था में नौ या दस हिजरी में मर गया।

मुनाफ़िकों ने जब मस्जिद बना ली तो उन्होंने हुज़ूर ﷺ से निवेदन किया कि आप स. उनकी मस्जिद में नमाज़ अदा करें। अल्लाह ने ऐसा किया कि जब ये लोग हुज़ूर स. की सेवा में उपस्थित हुए तो आप स. तबूक की यात्रा पर रवाना होने की तय्यारी कर रहे थे। आप स. ने फ़रमाया कि अभी तो मैं व्यस्त हूँ, यात्रा की तयारी कर रहा हूँ, जब हम यात्रा से वापस आएँगे तो इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ेंगे। तबूक के युद्ध से वापसी पर इस मस्जिद के विषय में आप स. को व्हयी के माध्यम से सूचित कर दिया गया, और फ़रमाया "और वे लोग जिन्होंने कष्ट देने एवं कुफ़्र फैलाने और मोमिनों में फूट डालने तथा ऐसे व्यक्ति को शरण देने के लिए, जो पहले ही अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई कर रहा है, एक मस्जिद बना ली है। वे अवश्य क़समें खाएंगे कि हम भलाई के सिवा कुछ नहीं चाहते, जबकि अल्लाह गवाही देता है कि वे निःसन्देह झूठे हैं" आंहुज़ूर ﷺ ने इस व्हयी के बाद मस्जिदे ज़िरार को गिराने का आदेश दिया। अतः आप स. के आदेश पर इस मस्जिद को आग लगा कर जला दिया गया।

जब आप स. मदीना तशरीफ़ लाए तो आप स. ने यह जगह आसिम बिन आदी को देना चाही ताकि वह यहाँ अपना घर बना लें। परन्तु हज़रत आसिम रज़ी. ने क्षमा चाही और सुझाव दिया कि यह जगह साबित बिन अरकिम को दे दी जाए क्यूंकि उनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं। अतः आंहुज़ूर ﷺ ने यह जगह साबित बिन अर्क़ीम को दे दी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि (आंहुज़ूर ﷺ ने) बावजूद मुनाफिकों के इतने बड़े षड्यंत्र के कोई शारीरिक दंड अथवा धन का दंड नहीं दिया।

लगभग दो महीने की यात्रा के बाद आंहुज़ूर ﷺ मदीने वापस तशरीफ़ ला रहे थे, ज्यूं ही आप स. को मदीने की बस्ती नज़र आई तो आप स. ने फ़रमाया कि यह वह पहाड़ (ओहद) है जो हमसे प्यार करता है और हम इससे प्यार करते हैं। अर्थात हुज़ूर ﷺ को मदीने की एक एक जगह से मुहब्बत थी।

आप स. ने फ़रमाया कि मुझे मदीने जल्दी पहुंचना है, जो तुममें से मेरे साथ चलना चाहे, चले।

तबूक की लड़ाई से वापसी पर आंहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि मदीने में कुछ लोग हैं कि जब भी तुमने कोई घटी पार की है अथवा यात्रा की है तो वे तुम्हारे साथ साथ ही थे। सहाबा ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह ﷺ वे मदीने में होते हुए हमारे साथ कैसे हो सकते हैं? आप स. ने फ़रमाया- वे मदीने में ही हैं और बीमारी इत्यादि के किसी कारण ने उन्हें रोका था। एक अन्य रिवायत में है कि जब आप स. वापस तशरीफ़ लाए तो आप स. ने अल्लाह ताला का शुक्र अदा करते हुए फ़रमाया- सब प्रशंसाएं अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने हमारी इस यात्रा में हमें अच्छा बदला, भलाई एवं नेकियाँ प्रदान कीं और जो हमारे पीछे रह गए उन्हें भी इस अच्छे बदले में हमारे साथ शामिल रखा। इस पर हज़रत आयशा रज़ी. ने निवेदन किया कि आप स. ने तो यात्रा की कठिनाइयां सहन की हैं तथा फिर इस सुन्दर बदले एवं पुण्य के अधिकारी हुए हैं, वे कठिनाइयां सहन किए बिना सुन्दर बदले एवं पुण्य के भागीदार कैसे हो गए? आप स. ने फ़रमाया कि वे लोग जिन्हें बीमारी ने रोके रखा, वे हमारे साथी हैं। अल्लाह की क़सम! उनकी दुआ दुश्मन पर हमारे हथियारों से अधिक प्रभावी है।

आंहुज़ूर ﷺ के आगमन पर मदीने के लोग नगर से बाहर आते और तराने और शेअर पढ़ पढ़ कर आप स. का स्वागत करते रहे। अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- इंशाल्लाह शेष कुछ अन्य घटनाएं हैं, पवित्र जीवन के आयाम हैं, वे आगे बयान करूंगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब